II Satnam Sakhi II

II Jai Shree Krishna II



PEARLS OF WISDOM

PART - 2

Swami Devprakashji Maharaj

II Jai Shree Krishna II



यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽत्मानं सृजाम्यहम् ॥

PEARLS OF WISDOM
PART II

PEARLS OF WISDOM

PART -2

by

Pujya Swami Devprakashji Maharaj

Published by

Ramchand Hariram Ramchandani

Swami Teoram Prem Prakash Ashram

Ulhasnagar - 421005

Tel.: (0251) 520542 * 522137

Date of Publication :

15th Aug., 2000
94th Birth Anniversary of
Pujya Swami Shanti Prakashji Maharaj

❊

Price :

Rs. 10/- only

❊

Available at :
Swami Teoram Prem Prakash Ashram
Ulhasnagar - 421005
Tel.: (0251) 520542 ❊ 522137

❊

Manu Ramchandani
Prem Prakash Ashram
Dubai (U.A.E.)

❊

Printed by :
Bharat Rohera
Kulbhushan Compusett Corp.
5A, Girdhari Sadan, D.L. Vaidya Road,
Dadar (W), Mumbai - 400 028. Tel.: 4221952

❊

PREFACE

As soon as Puj Swami Devprakashji had finished his discourse during his visit to Dubai in June, 2000 I took the opportunity and approached Sai to publish his thoughts in second volume. There had been an overwhelming response for his first book which prompted me to approach Sai wherein he agreed for the second volume be published. The thoughts in the book are Sai's inspirations which have been picked up from his discourses.

These are a few of Sai's selected thoughts which have been compiled together again in Part II. They are in Sindhi, Devnagiri, Hindi & English.

They have been compiled together in one book.

I would like to acknowledge Prof. Dayal 'Asha', Mr. Sugno Tolani, Ms. Rama Ramchandani, Mr. & Mrs. Gope Rupchandani, Shankar Kukreja, Mr. Himmatsing Advani & Mr. Bharat Rohera for helping me in translation and proof reading of the book .

Manu Ramchandani

दो पुष्प

महान विभूति कर्म योगी संत ब्रह्मलीन परम पूज्य सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश महाराज के परम शिष्य स्वामी देव प्रकाशजी भी विद्वान, सरलचित्त कर्मयोगी संत हैं । उनका जन्म १ जनवरी १९३८ में सिन्ध लाड़काणा जिला हैदर चांड़िया गाँव में श्री हुकूमतराय आहूजा के घर में हुआ। उनके जन्म का नाम श्री सन्मुखलाल है। उनकी माता का नाम तुलसीबाई था। देश विभाजन के पश्चात् वे उल्हासनगर में आकर बसे । १६ वर्ष की आयु में माता एवं पिताश्री ने सुपुत्र श्री सन्मुखलाल को पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के श्री चरणों में समर्पित कर दिया। सत्गुरु महाराज श्री की आज्ञा से उन्होंने वाराणसी में संस्कृत का गहन अध्ययन किया शास्त्रों का अभ्यास किया । उन्होंने शास्त्री एवं आचार्य श्री उपाधियां प्राप्त कीं । वे सत्गुरु महाराज की श्रद्धा भावना से सेवा करते रहे ।

सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् स्वामी देव प्रकाश उनकी ज्योति जगा रहे हैं । वे सत्गुरु महाराज की भाँति विभिन्न नगरों में जाकर प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाते हैं । वे परमार्थ एवं व्यवहार के लिए मार्गदर्शन कर रहे हैं ।

मुझे प्रसन्नता है कि स्वामी देव प्रकाश महाराज के ३१ सिन्धी वचनों का सुन्दर संग्रह, हिन्दी व अंग्रेजी के अनुवाद के साथ प्यारे भाई मनोहरलाल रामचन्द रामचन्दाणी प्रकाशित कर रहे हैं । प्रेमी प्रत्येक दिन एक-एक विचार पढ़कर या श्रवण कर, उसका चिन्तन-मनन कर लाभान्वित होंगे ।

- दयाल 'आशा'

स्वामी शान्तिप्रकाश निवास
उल्हासनगर - ४२१००५

// श्री सतनाम साक्षी //   // जय श्री कृष्ण //

देव वाणी (भाग-२)

PEARLS OF WISDOM (Part-2)

पूजनीय सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज,
पूजनीय सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज,
पूजनीय सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश महाराज
के चरण-कमलोंमें

सादर समर्पित

– देव प्रकाश

1st Day

ستگروُ رستو ٻڌائيندو آهي،
پر هلڻو پاڻ کي ئي پوندو آهي.

सत्गुरु रस्तो बुधाईंदो आहे,
पर हलणो पाण खे ई पवंदो आहे।

सत्गुरु मार्ग–दर्शन करते हैं,
परन्तु चलना हमें ही पड़ता है ।

'Satguru' shows the path;
but we have to tread it
by one's own self.

2nd Day

هميشه ڌيري ڌيري ڪم کي وڌائڻ گهرجي،
ڌيرج جي آڌار تي سڀ گڻ ڦليڀوت ٿيندا آهن.

हमेश: धीरे धीरे कम खे वधाइणु घुरिजे,
धीरज जे आधार ते सभ गुण फलीभुत थींदा
आहिन।

काम हमेशा धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए,
धीरज के आधार पर ही,
सब गुण फलीभूत होते हैं ।

Let us expand our work gradually.
Patience alone
pays rich dividends.

جنھن ۾ سُٺا سنسڪار آھن،
اُن جي لاءِ سُرڳ ھتي ئي آھي.

जंहिमें सुठा संस्कार आहिन,
उन्हन जे लाइ सुर्गु हिते ई आहे।

जिस इन्सान में शुभ गुण हैं,
उस इन्सान के लिए स्वर्ग यहाँ पर ही है ।

For a virtuous person,
Heaven is right here.

4th Day

وقت کي سجايو ڪندؤ تہ
وقت بہ توهان کي سرهو ڪندو.

वक्त खे सजायो कंदउ त
वक्तु बि तव्हांखे सुरहो कंदो ।

समय का सद्-उपयोग करेंगे,
तो समय भी आपको
सहयोग देकर रोशन करेगा ।

If you value time,
your life will be enriched.

پرماتما اسان کي هر سُٺي شيءِ
ٻين کي ورهائڻ لاءِ ئي ڏني آهي.

परमात्मा असां खे हर सुठी शइ ॿियन खे
विरहाइण लाइ ई ॾिनी आहे।

परमात्मा ने हर अच्छी वस्तु
दूसरों को बांटने के लिए ही तुम्हें दी हैं ।

Let us distribute the bounty
amongst others what God
almighty has showered on us.

ماتا ۽ پتا ديوتائن جي برابر آهن،
اِن ڪري هميشه اُنهن جي آڳيا مڃڻ کپي.

माता ऐं पिता देवताउन जे बराबर आहिन,
इन करे हमेशा उन्हनि जी आज्ञा मञिणुखपे।

माता तथा पिता देवताओं के बराबर हैं,
इसलिए हमेशा उनकी आज्ञा माननी चाहिए ।

Parents are Godlike. We must always obey them and seek their blessings.

7th Day

سڀني پاپن جي پاڙ 'ڪوڙ' آهي
اِن ڪري هميشه پاپن کان پاسو ڪري
ستمارگ ڏانهن هلڻ گهرجي.

सभिनी पापन जी पाड़ 'कूड़ु' आहे ।
इन करे हमेशः पापन खां पासो करे,
सत्मार्ग दा̱हुं हलणु घुरिजे ।

सभी पापों की जड़ 'झूठ' है ।
इसलिए हमेशा पापों से बचकर
'सत्मार्ग' की ओर चलना चाहिए ।

Lies is the root cause of all evil. We must rise above all lies and follow the path of truth.

اِنسان جو وڏي ۾ وڏو دُشمن 'آلس' آهي،
اِن ڪري ويهي نہ کاءُ پر وَهي کاءُ.

इन्सान जो वड्रे में वड्रो दुश्मनु 'आलसु' आहे ।
इन करे वेही न खाउ, पर वही खाउ ।

इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन 'आलस्य' है,
इसलिए निकम्मा होकर नहीं,
पर हमेशा मेहनत कर के खाना चाहिए ।

Idleness' is our biggest enemy. Let us enjoy the fruits of hard labour rather than leading an idle life.

اِنسان کي منمُک نہ پر
گُرمُک ٿيڻ گُھرجي.

इन्सान खे मन-मुखु न,
पर गुरुमुखु थियणु घुरिजे ।

इन्सान को मनमुख नहीं,
पर गुरुमुख होना चाहिए ।

One should follow his
master and not act
wishfully.

10th Day

پراتهڪال اُٿي ڪري سڀ کان پهرين
پنهنجي گُرَ چرنن جو ڌيان ڪرڻ گُهرجي.

प्रातःकाल उथी करे सभ खां पहिरियाईं पंहिंजे गुरु-चरणनि जो ध्यानु करणु घुरिजे।

सुबह-सबेरे (प्रातःकाल) उठकर सर्व-प्रथम अपने गुरु चरणों का ध्यान करना चाहिए।

As soon as we awake at dawn, we should meditate at the lotus feet of our Guru (Spiritual Master).

پُڃ ۽ شُڀ ڪرم ڪرڻ ۾ ڪڏهن بہ
دير نہ ڪرڻ گُهرجي.

पुञ ऐं शुभु कर्म करण में कड़िहिं
बि देरि न करणु घुरिजे ।

पुण्य और शुभ कर्म करने में,
कभी भी देर नहीं करनी चाहिए ।

Philanthropic and noble deeds
should never be delayed.

شانتي پرماتما جو سوَروپ آهي.

शान्ति परमात्मा जो स्वरूपु आहे ।

शांति परमात्मा का स्वरूप है ।

'Peace' is manifestation
(incarnation) of 'God'.

پريوءَ کان هميشه سُمت،
مَهر ۽ معافي گُهرڻ گُهرجي.

प्रभुअ खां हमेशा सुमति,
महिर ऐं माफी घुरणु घुरिजे ।

भगवान् से हमेशा सुमति, आशीर्वाद और क्षमा मांगनी चाहिए ।

We should always seek true virtues, mercy and forgiveness from Almighty God.

14th Day

ڌرم جو اصُلي مطلب
آهي ٻِئي کي پيڙا نہ ڏيڻ.

धर्म जो असुली मतलबु आहे,
ब॒िए खे पीड़ा न ड॒ियणु ।

धर्म का असली मतलब है,
दूसरों को दुःख नहीं पहुचाना।

True meaning of religion is
not to cause grief to others.

اڄ اِنسان گَروءَ ’کي‘ ٿا مڃِن،
پر گَروءَ ’جيِ‘ نٿا مڃِن،
گَروءِ ’جيِ‘ آگيا مڃڻ سان ئي سڦلتا ملندي.

अजु इन्सान गुरुअ ‘खे’ था मञनि,
पर गुरुअ ‘जी’ नथा मञनि ।
गुरुअ ‘जी’ (आज्ञा) मञण सां ई
सफलता मिलंदी ।

आज लोग गुरु ‘को’ मानते हैं,
गुरु ‘की’ नहीं मानते ।
गुरु ‘की’ (आज्ञा) मानने से
ही सफलता मिलेगी ।

Today people have faith in 'Guru' but do not obey him faithfully. Success will come by obeying commands.

16th Day

اسان سنسار ۾ ڀلي رهون،
پر سنسار اسان ۾ نہ رَهي.

असां संसार में भली रहूं,
पर संसार असां में न रहे ।

हम संसार में भले रहें,
पर संसार हम में नहीं रहना चाहिए ।

Reside in this world
by all means; but don't
let the world reside
within you.

17th Day

واپار ۾ ڌرم کي ڀائيوار ڪرڻ سان
هميشه فائدو ئي ٿيندو،
ڪڏهن بہ (نقصان) گهاٽو نہ ٿيندو.

वापार में धर्म खे भाईवार करण सां
हमेशा फाइदोई थीं दो,
कदिहिं बि घाटो (नुकसान) न थीदो।

व्यापार में धर्म को भागीदार बनाने से,
हमेशा लाभ ही होगा।
कभी व्यापार में घाटा नहीं होगा।

We will never sustain business losses if we have 'Dharma' (ethical principles) as our partner. It will always yield us prosperity.

جيئن پِتا پنهنجي اولاد جو ڏُک
نہ سهي سگهندو آهي،
تنهن نموني ايشور بہ پنهنجي
ڀڳتن جو ڏُک نہ سهي سگهندو آهي.

जिएं पिता पंहिंजे औलाद
जो दुखु सही न सघंदो आहे,
तंह नमुने ईश्वरु बि पंहिंजे भगतनि
जो दुखु सही न सघंदो आहे ।

जैसे पिता अपनी औलाद का
दु:ख नहीं सह सकता है,
वैसे ही भगवान् भी अपने भक्तों का
दु:ख नहीं सह सकता ।

As father cannot bear the sorrows of his son; so also 'God' cannot bear the miseries of his faithful devotees.

بِنا اَهنڪار جي ڪيلَ شُڀ ڪرمن سان
اَنتهڪرڻ جي شُڌي ٿيندي آهي.

बिना अहंकार जे कयल शुभ कर्मनि
सां अंत:करण जी शुद्धि थीदीं आहे।

बिना अहंकार किए शुभ कर्मों से
अंत:करण की शुद्धि होती है ।

Good deeds done without ego
bring purification and bliss to
inner soul.

وويڪ جو اَنادرُ ڪڏهن
بہ نہ ڪرڻ گُهرجي.

विवेक जो अनादरु
कदिहिं बि न करणु घुरिजे ।

विवेक का अनादर कभी भी
नहीं करना चाहिए ।

We should never disrespect
our conscience.

ڪامنائون ئي هن مَنُشيہ کي سنسار (دُک)
طرف ڇِڪي وڃن ٿيون.
ان ڪري هميشه اِڇائون گهٽائڻ گهرجن.

कामनाऊं ई मनुष्य खे संसार (दु:ख) तरफ
शिके वञन थियों ।
इन करे हमेशा: इच्छाऊं घटाइणु घुरिजनि ।

इच्छा ही मनुष्य के दु:ख का कारण है ।
इसलिए कम इच्छाएँ रखनी चाहिएँ ।

Lust for wants attracts human beings towards worldly miseries. Let us always control and limit our wants.

ستسنگ ۾ اچڻ ۽ ٻڌڻ سان
سمسيا جو حلُ ٿيندو آهي.

सत्संग में अचण ऐं बुधण सां
समस्या जो हलु थींदो आहे।

सत्संग में आने तथा सुनने से
समस्याओं का समाधान होता है ।

We set solutions to our problems by attending and listening to 'Satsang' (religious discourses).

پاڻ کي هميشه گروءَ ۽ ايشور
جي اڳيان گهٽ سڏائبو
تہ پڪ ئي پڪ ٻيڙو پار ٿيندو.

पाण खे हमेशा: गुरुअ ऐं ईश्वर जे अगि॒यां घटि सदा॒इबो त पक ई पक बे॒ड़ो पार थींदो ।

स्वयं को गुरु तथा ईश्वर–समक्ष छोटा जताने से ही कार्य सिद्ध होता है ।

By always lowering ourselves in front of 'Guru' and 'God', we will surely sail through success.



ڪوئي بہ ڪَمُ (ڪرمُ) ويچاري ۽
سنڀالي ڪرڻ گُهرجي.

कोई बि कमु वीचारे
ऐं संभाले करणु घुरिजे ।

कोई भी कर्म विचार और
संभल कर करना चाहिए ।

All our acts should be
done with due diligence
and deliberation.

ويچار سان گيان ٿيندو آهي،
’گيان‘ سان ويراڳ ٿيندو آهي،
ويراڳ سان ’سُک‘ يا ’آتما‘ جو اَنوڀو ٿيندو آهي.

वीचार सां ज्ञानु थींदो आहे,
‘ज्ञान’ सां वेरागु थींदो आहे
वेराग सां ‘सुख’ या
‘आत्मा’ जो अनुभव थींदो आहे ।

ध्यान से ज्ञान प्राप्ति,
ज्ञान से वैराग्य प्राप्ति होती है,
तथा वैराग्य से आत्मिक
सुख का अनुभव होता है ।

Meditation is resource of knowledge. Renunciation comes with knowledge. Inner bliss is experienced with renunciation.

26th Day

اصلي آنند پنهنجي اندر ۾ ئي آهي،
اِنڪري ٻاهر جي پدارٿن ۾
ڳولهڻ جي ضرورت ڪونهي.

असुली आनंदु पंहिंजे अन्दर में ई आहे,
इन करे ॿाहिर जे पदार्थनि में ॻोल्हण जी
जरूरत कीन आहे ।

असली आनंद अपने अन्त:करण में है,
इसलिए बाहर के विषयों में
खोजने की ज़रूरत नहीं है ।

Real joy pervades within us.
There is no need to look for
worldly materials.

27th Day

اجايو ڪڏهن به نه ڳالهائجي ڇو جو
سواسن جو مُلهه هيرن ۽ جواهرن
کان به وڌيڪ آهي.

अजायो कड॒हिं बि न गा॒ल्हाइणु घुरिजे,
छो जो सुवासनि जो मुल्हु हीरनि
ऐं जवाहरनि खां बि वधीक आहे ।

कभी भी व्यर्थ-बातें न करें,
स्वासों का मूल्य हीरे-जवाहरों
से कहीं ज़्यादा है ।

Wisdom is in silence. Our breath is much more precious than any wordly treasure.

وقت کان اڳ ۽ قسمت کان وڌيڪ،
ڪنهن کي ڪجهه ملڻو نه آهي.

वक्त खां अगु ऐं किस्मत खां वधीक,
कंहिंखे कुझु मिलणो न आहे।

**समय से पहले तथा भाग्य से
ज़्यादा किसी को भी कुछ
प्राप्त नहीं होने वाला।**

No individual ever attains
anything more than what is
destined and before
appropriate time.

جنهن جي مٿان پنهنجي ستگر
جي مَهر هوندي آهي
اُهو ڪُسنگ کان بچي سگهندو.

जंहिंजे मथां पंहिंजे सत्गुर जी महिर हूंदी आहे,
उहो कुसंग खां बची सगंदो।

जिस पर अपने सत्गुरु की कृपा होती है,
वह कुसंग से बच सकता है।

Blessed indeed is the person who has grace of his 'Satguru'. It will save him from bad company.

من کي ڪڏهن به واندو نہ ڇڏجي،
ڇو جو من ئي پنهنجو سڀ کان وڏي ۾ وڏو دوست
۽ وڏي ۾ وڏو دشمن آهي.

मन खे कड़हिं भी वांदो न शड़िजे शो जो मन ई पहिं जो सभ खां वड़े में वड़ो दोस्त ऐ वड़े में वड़ो दुश्मनु आहे ।

**मन को कभी भी निकमा अथवा
ख़ाली नहीं छोड़ना चाहिए ।
मन ही इन्सान का सर्वश्रेष्ठ मित्र
तथा सर्वोपरि दुश्मन है ।**

Mind should never be kept idle; because mind alone is our biggest friend and enemy.

شرڌا ۽ وشواس سان جيڪڏهن
گُروءَ جي در تي وڃبو تہ
بيڙو ضرور پار پهچندو (ٿيندو).

श्रद्धा ऐं विश्वास सां गुरुअ-दरि
वञिबो त बेड़ो अवश्य पारि थींदो ।

**श्रद्धा और विश्वास से गुरु के द्वार
पर जाओगे तो बेड़ा अवश्य पार होगा ।**

By going to the doorstep of our 'Guru' with devotion and faith, we will certainly attain success.

पलउ

आशवन्दी गुरु तो दर आई, तुम बिन ठौर न काई ।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाईं ।
पाइ पलउ मैं पेर प्यादी, आयसि हेत मंझाई ।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नाम सनेही ।
नाम तुम्हारा साबुन करसां, धोसां पाप सभेई ।
कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाई ।

१. पलउ जे पाईन दाता तुंहिजे दर ते,
दाता दर आयनि जा, अर्ज ओनाईं ।
मिड़ई तिनि जे तन मन जा, दुखड़ा मिटाईं,
आसूं अघाई, 'आसू' आस वन्दनि जूं ।

२. जो जन आ गुरु शरण में, बैठ करे अर्दास ।
कहे टेऊँ तिस दास की, पूर्ण करिये आस ।
दूख सर्व ही दूर हो, लगे न यम की त्रास ।
कारज होवन रास, संशय काई ना रहे ।

स्वामी शांती प्रकाश महाराज का

सन्देश

देखना चाहते हो तो हक और नाहक में भेद देखो ।

सुनना चाहते हो तो प्रभु की प्रशंसा तथा ग़रीबों की पुकार सुनो।

बोलना चाहते हो तो मीठे वचन तथा सत्य बोलो।

खाना चाहते हो तो गुस्से तथा क्रोध को खाओ।

तोबह करना चाहते हो तो पाप तथा ज़ुल्म से तोबह करो।

पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा (कपड़ा) पहनो।

देना चाहते हो तो दान देकर भूल जाओ ।

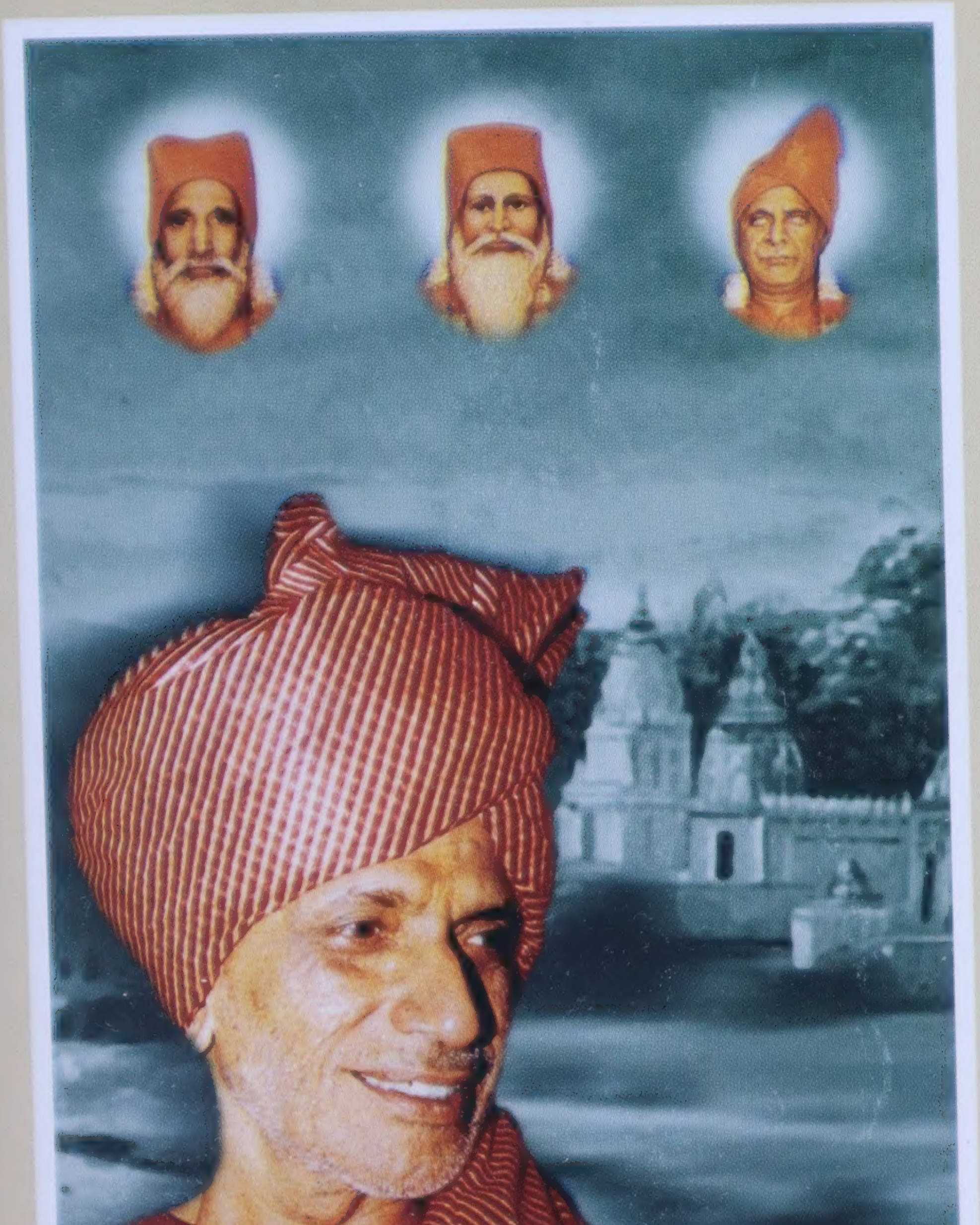
चलना चाहते हो तो सत्य की राह पर चलो।

दूसरों की निंदा करना सबसे बड़ा पाप है ।

दूसरों की चुग़लियों पर कभी विश्वास न करें।

ॐ शान्ति

II Satnam Sakhi II



Swami Devprakashji Maharaj

II Satnam Sakhi II

देव वाणी

भाग – २



Swami Shanti Prakashji Maharaj

Swami Teoram Prem Prakash Ashram
Ulhasnagar - 421005
Tel.: (0251) 520542 • 522137